संवाद को सरल बनाने वाली हो भाषा -प्रो. ओम विकास

वर्धा दि. 01 मार्च 2012- संवाद को सरल बनाने वाली भाषा ही निरंतर विकास की प्रक्रिया में बची रह सकती है। आम आदमी तक पहुंचने में आसान हो और उससे आगे की पीढी को कोई परेशानी न हो तभी भाषा अपनी निरंतर विकास प्रक्रिया में और विकसित होती रहती है। भारत में राजभाषा संक्रमणकाल से गुजर रही है यह हमारे सामने एक चुनौती है। पारस्परिक मेल-जोज को सुदृढ बनाने वाली भाषा को लेकर हमें इस चुनौती हो निपटना होगा। उक्त विचार सूचना-संचार मंत्रालय में पूर्व वरिष्ठ निदेशक तथा भाषा प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ प्रो. ओम विकास ने रखे। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ द्वारा '21वीं सदी में राजभाषा हिंदी' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बीज वक्तव्य दे रहे थे। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन प्रमुखता से उपस्थित थे।

राजभाषा हिंदी के बदलते स्वरूप का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी में भी बदलाव आते रहे हैं। शिक्षा, राजनीति और टैक्नोलॉजी से राजभाषा का स्वरूप बदलता है। हिंदी त्रिवेणी है। इसमें संस्कृत, उर्दू ओर अंग्रेजी के शब्द कम या अधिक

मिलते है, ये सब मान्य है। आज वेब पर हिंदी का प्रयोग ब्लॉग, चैट, एमएमएस, ई-मेल, वेब साइट कंटेंट, फाइल के रूप में बढ़ने लगा है। पत्र व्यवहार के लिए कार्यालयों में कप्म्पूटर का प्रयोग सामान्य अनिवार्यता बन गई है। अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव से हिंदी भाषा मिलीजुली भाषा बनती जा रही है। दूरदर्शन पर अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग सहजता का द्योतक बनता जा रहा है। अखबारों में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग बाहुल्य है, शहरवालों को शायद समझ आए, लेकिन गांव वालों को इनके अर्थ को समझना मुश्किल है। इन शब्दों के भावार्थ को समझाया भी नहीं जाता। अखबारों में ही देखिए, गांव वाले अर्थवा शहरों में भी कम पढ़े लिखे लोग सीईओ, कोड ऑफ कंडक्ट, जॉय रीइडिंग, सर्वर, कंज्यूमर, वेस्ड, यूथ, जनरेशन, डीयू, इकनॉमिक ग्रोथ, मॉक ड्रिल, मेनस्ट्रीम इत्यादि ढेर सारे शब्दों को कैसे समझेंगे। उन्होंने कहा कि हिंदी के अखबार शहर और गांव को जोड़ें ऐसी अपेक्षी की जाती है। राजभाषा हिंदी संक्रमण काल में है। भाषा के इस संक्रमण को कैसे निपटाया जाए इस पर उन्होंने कहा कि भाषा सरल हो, छोटे वाक्य हों। उन्होंने कहा कि इंटरनेट पर नागरी ओर अन्य भारतीय लिपियों का स्थान बहुत नीचे होने के कारण है- साक्षरता की कमी, कप्म्यूटर प्रयोग कम, साधन सम्पन्न भारतियों को अपनी भाषा पर गर्व नहीं, शिक्षा में भारतीय भाषाओं का प्रयोग नगग्य इत्यादी।

अपने विद्वत्तापूर्ण प्रपत्र में प्रो. ओम विकास ने कहा कि 21वीं सदी में विकास, गति और सामाजिक एवं पर्यावरण संवेदनशीलता प्रमुख विषय हैं। विकास का लाभ सभी को मिले और विकास प्रक्रिया में सभी की भागीदारी भी हो। सर्व शिक्षा और कार्य कौशल से गतिमय विकास संभव हैं। राजभाषा हिंदी भारत देश के दिलों और कोने-कोने को जोड़ती है। राजभाषा हिंदी का स्वरूप सरल हो और वैज्ञानिक संकल्पनाओं की अभिव्यक्ति में सक्षम हो। राजभाषा का गुण-दोष तथा संभावित लाभ-हानि के विश्लेषण के लिए उन्होंने पांच बिंदुओं पर प्रकाश ड़ाला, वे हैं-संवाद एवं सेवाएं, विज्ञान-तकनीकी एवं इनोवेशन, उद्यमिता एवं रोजगार, संस्कृति संरक्षा, गवर्नेंस एवं न्याय। उन्होंने विश्वास जताया कि आम लोगों की भागीदारी से सतत विकास पथ प्रशस्त होगा।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी

xka/kh fgYl] o/kkZ&442 005 ¼egkjk"V³½] Hkkjr
Gandhi Hills, Wardha-442 005 (Maharashtra), INDIA
फोन/फैक्स: 07152-252651
bZ&esy@E-mail: pro@hindivishwa.org, **osclkbV@Website:** www.hindivishwa.org

विकासात्मक कार्यातूनच राजभाषा विकसित होईल -प्रो. ए. अरविंदाक्षन

हिंदी विश्वविद्यालयात '21व्या शतकात राजभाषा हिंदी' विषयावर दोन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाळेचे उदघाटन

वर्धा दि. 01 मार्च 2012: हिंदीला राजभाषा म्हणून विकसित करण्यासाठी केवळ प्रशासकीय स्तरावर नव्हे तर विकासात्मक कार्यक्रम आणि उपक्रमांच्या माध्यमातून काम केले पाहिजे असे आवाहन महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे प्रकुलगुरू प्रो. ए. अरविंदाक्षण यांनी केले. विश्वविद्यालयातील अनुवाद आणि निर्वचन विद्यापीठाच्या वतीने 21व्या शतकात राजभाषा हिंदी या विषयावरील दोन दिवसाच्या

राष्ट्रीय कार्यशाळेच्या उदघाटन प्रसंगी ते (गुरूवारी) बोलत होते. राजभाषा ही जनभाषा झाली पाहिजे असे सांगून ते म्हणाले की त्यासाठी तमाम तंत्रज्ञान क्षेत्रातील ज्ञान हे हिंदीमध्ये उपलब्ध झाले पाहिजे. यावेळी केंद्रीय सूचना-संचार मंत्रालयात वरिष्ठ माजी निदेशक प्रो. ओम विकास, हैदराबाद विश्वविद्यालयातील प्रो. पंचानन मोहंती, विश्वविद्यालयातील भाषा विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, प्रो. महेंद्र कुमार पाण्डेय, डॉ. अन्नपूर्णा सी. सहित कार्यशाळेकरिता आलेले प्रतिनिधी उपस्थित होते.

प्रो. अरविंदाक्षण म्हणाले की इंजीनियरिंग, मेडिकल आणि कृषि सारखे विषय आम्हाला हिंदीतून शिकवायला हवे त्यासाठी विश्वविद्यालय प्रयत्न करील आहे. नॅशनल ट्रांसलेशन मिशनचे काम मैसूर येथे होत आहे त्यातील हिंदीचे काम विश्वविद्यालयाकडे आले पाहिजे असा आमचा आग्रह आहे. अनुवादाशी संबंधित एक महत्वाकांक्षी योजना चालू करण्याचा आमचा मानस आहे. असेही ते म्हणाले. प्रो. ओम विकास म्हणाले की हिंदीला ग्लोबल स्वरूप द्यायचे असेल तर तिला भाषांतराच्या कुबडयापासून मुक्त केले पाहिजे. भाषांतर करतांना ते लेखकोन्मुखी होण्याऐवजी वाचकोन्मुखी झाले पाहिजे असेही ते म्हणाले. विश्वविद्यालयाने 'टेक्नोजॉलिकल ट्रांसक्रिएशन मिशन' शुरू करावे अशी विनंतीही ओम विकास यांनी यावेळी केली. कार्यशाळेत सेंट्रल इंस्टिटयूट ऑफ फिशरीज टेक्नोलॉजी, कोचीन चे उप-निदेशक डॉ. जेस्सी जोसेफ, सेंट्रल मेरिन फिशरीज रिसर्चच्या शीला पी. जे., सेंट्रल फिशरीज एज्युकेशन इंस्टि्टयूटचे प्रताप कुमार दास, एचओसीएल, कोचीनचे ओ. रमेश, 'नीरी', नागपूर येथील नीरीचे हिंदी अधिकारी यू. एम. टाकळीकर, बँक ऑफ इंडिया, वर्धा येथील राजभाषा प्रभारी मुरलीधर बेलखोडे तसेच विविचे हिंदी अधिकारी राजेश कुमार यादव सहभागी झाले.

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी